तृतीय अध्याय

'पानी के प्राचीर' में पात्र - चरित्र चित्रण

प्रस्तावना -

कथानक की तरह आँचलिक उपन्यासों के पात्रों का भी अपना अलग वैशिष्टय होता है। इन पात्रों के संबंध में दो महत्वपूर्ण बातें यही हैं कि ये अंचल विशेष तक सीमित होते हैं और दूसरी यह कि इनकी संख्या बहुत अधिक होती हैं।

आँचलिक उपन्यासों के पात्र अन्य प्रकार के उपन्यासों के पात्रों के समान ही सामान्य जीवन से चुने जाते हैं। परंतु आँचलिक जीवन के स्वयं के विशिष्ट होने के कारण पात्रों में भी वैशिष्टय आ जाता है। यह वैशिष्टय सभी वर्गों के पात्रों में समान नहीं होता।

आँचलिक उपन्यासों में प्रमुख रूप से दो तरह के पात्र देखने को मिलते हैं। एक विकसित पात्र जो अपने अंचल को प्रगतिपथ पर ले जाने के लिए सक्रिय होते हैं और दूसरे जो अविकसित होते हैं। विकसित पात्र अपने कार्यों एवं विचारधारा के कारण पाठकों का ध्यान आकर्षित करके विशिष्ट बन जाते हैं। कथाकार के पास उसके चरित्र चित्रण के अनेक अवसर रहते हैं। इन उपन्यासों में ऐसे पात्र अधिक होते हैं।

अन्य एक प्रकार के पात्र ऐसे होते हैं जो समय की मांग के अनुसार आचरण करते हैं जो विचार से प्रगतिवादी एवं आदर्श होते हैं। दूसरे जो गाँव की प्रगतिशील शक्तियों के विरोधी बनकर सामने आते हैं। क्रमश: इन्हें प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी कहा जाता हैं।

इन उपन्यासों के पात्रों में कुछ ऐसे भी पात्र मिलते हैं, जो अंचल के बाहर से आकर वहाँ के जन-जीवन में नई रोशनी और जागरण की भावना पैदा करते हैं।

आँचलिक उपन्यास में पात्रों के व्यक्तित्व निर्माण में उपन्यासकार तटस्थ रहता है। ये पात्र अपने अंचल का या परिवेश की जिंदगी के साथ जिस रूप में रचा होता है उसी यथार्थ रूप को कथाकार उस चरित्र को चित्रित करता हैं उसमें कोई परिवर्तन नहीं कर सकता। इसीकारण पात्रों का यह सहज चित्रण आँचलिक जीवन को मूर्तरूप देता है। इन पात्रों की भाषा, वेशभूषा, उठना-बैठना, चलना-फिरना सब उस अंचल का

यथार्थ रूप प्रस्तुत करता है। आँचलिक उपन्यासों में उस अंचल या क्षेत्र का समग्र जीवन ही नायक होता है पात्रों का अस्तित्व गौण हो जाता है। और अंचल ही नायक बनकर जीता है।

'' आँचलिक उपन्यासों में पात्रों की सृष्टि तथा उनकी चरित्र निर्माण योजना के पीछे क्रियाशील लेखकीय कल्पना कई स्तरों पर परंपरागत उपन्यासों से भिन्नता लिए होती है। '' किसी विशिष्ट अंचल की कहानी कहने या लिखने का विशिष्ट तात्पर्य उस अंचल के निवासियों की कहानी कहना होता है। अत: आँचलिक उपन्यासों में पात्र कल्पना की प्रमुख विशिष्टता समूह पात्र की कहानी कहना नहीं है, संपूर्ण अंचल की कहानी कहना होता है। अत: इन उपन्यासों में पारंपारिक उपन्यासों की तरह प्रधान पात्र या 'नायक' नहीं होता। चरित्र निर्माण की दृष्टि से इसकी 'नायक शून्यता' एक विशिष्टता है।'' 1

'' यहाँ अंचल स्वयं एक जीवंत विशिष्ट पात्र समूह पात्र है और शेष सभी पात्र उसकी सामूहिकता के अंग हैं मानों असंख्य पात्र स्वयं नहीं है, किसी के लिए है। इन असंख्य पात्रों का प्रतिनिधि प्रमुख पात्र - शास्त्रीय शब्दावली में नायक भी अंचल रूपी महानायक के अधीन रहता है। इसतरह यह अंचल पात्र सारे कथानक पर छाया रहता है और सभी पात्रों को संचालित करता रहता है।'' 2

चरित्र -चित्रण

निरंजन अर्थात नीरू 'पानी के प्राचीर' उपन्यास का सबसे प्रभावशाली केंद्रिय पात्र नायक का आभास देता है। वह पांडेपुरवा गाँव के सुमेश पांडे और रूपा का बेटा है। वह अन्याय का डटकर सामना करनेवाला, गरीबों के प्रति सहानुभूति रखनेवाला, धार्मिक कर्मकांडों के प्रति उदासीन रहनेवाला, बुध्दिमान, मेघावी तथा मेहनती व्यक्ति है। वह स्वाभिमानी, गांधीवादी तथा आदर्श प्रेमी के रूप में सामने आता है। प्रस्तुत उपन्यास में नीरू का बचपन से प्रौढावस्था तक का चरित्र उभरकर आया है। वह जीवनपर्यंत आंतरिक तथा बाहय संघर्षों से जूझता हुआ दिखाई देता है।

उपन्यास के प्रारंभ में ही होली के राग -रंग में हो हल्ला मचानेवाले छोकरों में नीरू के दर्शन होते हैं। परंतु इन छोकरों में नीरू का व्यक्तित्व अलग रूप से पहचाना जा सकता है। अन्य छोकरे गरीबों की झोपडियाँ तोडकर होली में जलाते हैं। गरीबों की पिटाई करते हैं। यह बात नीरू को अच्छी नहीं लगती है। वह छोकरों को समझाता है कि, '' भाइयो, होली में हमें पुरानी और सडी-गली चीजें डालनी चाहिए।

होली में हम लोग अपने पुराने गम को वैरभाव को जलाते हैं और नया जीवन शुरू करते हैं। यह उपला लोगों का जीवन है इसे होली में डालना गुनाह हैं।'' 3

गांव के मुखिया और महेश के विरूध्द बोलने की किसीकी भी हिम्मत नहीं होती है, परंतु महेश द्वारा नीरू पर जब झूठा आरोप लगाया जाता है, तब नीरू निर्भिकता से मुखिया का प्रतिवाद करता है। होली का रागरंग शुरू होता है परंतु गांव में होली के अवसरपर हर साल होनेवाले झगडों को देखकर नीरू उदास हो जाता है। वह महेश आदि गांव के छोकरों को चिट्ठी के द्वारा संदेश भेजता है कि,''आज का त्यौहार प्रेम और एकता का त्यौहार है। आज के दिन हमें अपने सब भाइयों के गले मिलना चाहिए। आज के दिन गाली-गलौज करना और सिर फडौबल करना कहाँ तक जायज है ? आप सोंचें आप अपने एक भाई की प्रार्थना पर ध्यान देंगे, यह मुझे उम्मीद है।'' 4

लोग होली के अवसर पर बडे बूढों के शरीर पर धूल झोंककर उनका हँसी मजाक उडाते हैं, घरों में घूसकर औरतों पर गंदी गंदी फब्तियाँ कसते हैं यह देखकर नीरू के मुलायम हृदय पर चोट लगती है।

गांव के लोग नये कपडे पहनकर फाग गाते हुए वर्षारंभ की खुशियाँ मना रहे हैं। नीरू की कमीज फटी हुई है तथा नीरू के भाई-बहन नए कपडों के लिए तरसते हैं। नीरू इस व्यथा को सह नहीं सकता है। मुखिया का बेटा महेश नीरू की फटी हुई कमीज और फाडकर नीरू की गरीबी का मजाक उडाता है। नीरू उदास होकर चलने लगता है। उसे रास्ते में पेड के नीचे बैठा असहाय्य और भूखा-प्यासा रामदीन दिखाई देता है। रामदीन की दयनीय अवस्था देखकर नीरू के मन में रामदीन के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होती है। वह रामदीन को खाना लाने अपने घर चला जाता है। परंतु घर में खाना खतम हुआ है यह देखकर नीरू संध्या के घर से खाना लाकर रामदीन को देता है।

नीरू मेहनती भी है और बुध्दिमान भी। नीरू पिता के साथ खेती में काम भी करता है , और स्कूल भी जाता है। दिनभर मेहनत करने से सुबह उसकी नींद जल्दी नहीं खुलती है। इसलिए उसे हर रोज सुबह पिताजी की डाँट खानी पडती हैं और स्कूल में देर होने से मास्टरजी उसकी पिटाई करते हैं। परंतु वह पढाई में तेज है। उसके सामने अन्य छोकरों को मास्टरजी की मार खानी पडती हैं। महेश भी नीरू से बदला लेना चाहता है परंतु नीरू से सीधे मुकाबला करना संभव नहीं है। इसलिए वह नीरू का दोस्त आठवी कक्षा के दुबले पतले रमेश की पिटाई करता है। नीरू रमेश को महेश के हाथों से छुडाता है और महेश की काफी पिटाई करता है। गांव के प्रति नीरू के मन में अविश्वास उत्पन्न हो जाता है। उसे मेले में अपने पिता का

नाचना भी अच्छा नहीं लगता है।

बैजू के घर खान-पान करने के संबंध में मुखिया के द्वारा किए गए प्रस्ताव का गांव के सभी लेग समर्थन करते हैं। परंतु अकेला नीरू मुखिया के प्रस्ताव का निडरता से विरोध करता है।

'' मुखिया अपने घर के मालिक होंगे मेरे घर के नहीं। जाइए खाइए आप लोग। आदमी अपने कर्मो से शुध्द होता है, गंगा नहाने से या भागवत सुनने से नहीं। अगर बैजू भाई आज से ही बुरा कर्म करना छोड दे तो सबसे पहले हम लोग खाएँगें उनके यहाँ। मगर नहीं, वे गंगा नहाकर भोज देकर फिर वही बुरा काम करेंगें। हम नहीं खाते उनके यहाँ।'' **5**

मलिंद के प्रोत्साहन से नीरू भरी सभा में मुखिया की बात का विरोध कर सका था। परंतु उस समय सभा में मलिंद उपस्थित नहीं था। इसलिए नीरू को लगता है कि, मलिंद नीरू से उस्तादी पढ रहा है। नीरू मलिंद से सभा में उपस्थित न रहने का कारण पूछता हैं। तथा मुखिया से बदला लेने का उपाय भी पूछता हैं। मलिंद नवयुवक संघ की स्थापना करने का प्रस्ताव रखता है, पर नीरू को इस बात पर विश्वास नहीं होता है क्यों कि वह जानता है कि गांव के छोकरे अपने घरवालों के सामने भीगी बिल्ली बन जाते हैं।

नीरू एक आदर्श प्रेमी है। वह घनश्याम तिवारी की बेटी संध्या से सच्चे दिल से प्रेम करता है। वर्षारंभ के दिन दोनों एक दूसरे के चेहरे पर अबीर और कुंकुम रगड देते हैं। नीरू सत्रह साल का हो जाता है। नीरू की माँ को नीरू के विवाह की चिंता सालती रहती है। नीरू अपना निश्चय प्रकट करता है कि, वह पच्चीस साल से पहले शादी नहीं करेगा। संध्या के द्वारा कोसने पर नीरू कहता है उसने छठी कक्षा में पढनेवाली चाँद जैसी खुबसूरत लडकी देख ली है। संध्या के द्वारा संदेह प्रकट करने पर नीरू कहता है कि वह लडकी संध्या ही है। संध्या को पछतावा होता है कि उसने व्यर्थ नीरू के संबंध में संदेह प्रकट किया। तब नारी मनोविज्ञान को जाननेवाला नीरू कहता है कि,'' सभी औरतें समान रूप से शंकाशील होती हैं संध्या इसमें तुम्हारा क्या कसूर!'' **6** नीरू हर रोज संध्या को मन लगाकर पढाता है। परंतु वह संध्या के सामने संदेह प्रकट करता है कि शायद दोनों के संबंध टूट जाएगें। क्योंकि नीरू गरीब है इसलिए संध्या के माँ बाप इस शादी के लिए तैयार नहीं होंगे। कुछ दिन बाद संध्या पढाई के लिए गोरखपुर चली जाती है। संध्या का पढाई के लिए जाना नीरू को अच्छा नहीं लगता हैं। परंतु उसे इस बात का डर भी लग रहा है कि कहीं संध्या शहर जाकर नीरू को भूल तो नहीं जाएगी।

'' नीरू पहले से होशियार तो है ही उसमें गहरी मानवीय करूणा और उदारता भी है। वह दूसरों के दुख से द्रवित होता है। खुद कष्ट उठाकर भी दूसरों के दु:ख दर्द में हाथ बँटाता है। और सबसे बडी बात यह है कि वह शोषण और दमन का अन्याय और अत्याचारों का खुलकर विरोध करता है। '' 7

परंतु वह किसी के सामने झुकता भी नहीं और किसी से किसी प्रकार का समझौता भी नहीं करता है। नीरू के मन में न्याय और समता की कामना बलवती हो जाती है। उसके लिए वह पूरे विश्वास के साथ संघर्ष भी करता रहता है। परंतु अपनी मर्यादाओं से वह धीरे-धीरे अवगत होने लगता है और उसकी न्याय और समता के लिए संघर्ष की चेतना कुंठित होने लगती है।

नीरू की प्राथमिक शिक्षा खत्म होती है। गांव में अगली शिक्षा का प्रबंध नहीं है। घर की गरीबी के कारण शहर जाकर पढाई करना संभव नहीं है। सारे खेत मुखिया के पेट में चले गए हैं। घर का सामान बनिए लोगोंने हडप कर दिया है। चारों ओर से कर्ज दहाड रहा है। बैजू भी नया दुश्मन बन गया है। बैजू ने नीरू के घर को आग लगाई है। नीरू इस हादसे के कारणों पर विचार करता है और घर चलाने के लिए कहीं नौकरी करने का निश्चय करता है। वह मास्टरी के चुनाव के लिए डिस्ट्रीक्ट बोर्ड पहुँच जाता है। उसे उम्मीद हो रही है कि उसकी नियुक्ति हो जाएगी। परंतु आगे चलकर उसे मालूम होता है कि किसी की सिफारिश के बिना नौकरी का काम नहीं होता है। नीरू मलिंद का घर ढूँढने के लिए रास्ते से चल रहा है। रास्ते में अचानक मलिंद की भेंट हो जाती है। परंतु वह बिना कोई अधिक पूछताछ किए मित्र के साथ टेनिस खेलने चला जाता है। नीरू का भ्रमभंग होता है।वह उदास होकर पपीहा पांडे के यहाँ जाने लगता है।इतने में उसे संध्या की पुकार सुनायी देती है। संध्या उसे घर ले जाती है। दोनों एक-दूसरे से बहुत सारी बातें करना चाहते हैं, पर मलिंद दोनों के बीच पहाड बन कर रह जाता है।

गौरा और राप्ती नदी को बाढ आ जाती है। चारों ओर हाहाकार मच जाता है। सेठ चोंकरमल बाढ पीडितों के लिए नावें छोडकर दाल-चावल बाँट रहा है। गांव के लोगों के साथ नीरू नाव के पास जाकर कुछ लेकर आता है। परंतु उसका स्वाभिमान आहत हो जाता है। उसे इस बात का दुख होता है कि वह अपने घर के लिए कुछ भी नहीं कर पा रहा है। दूसरों के सामने हाथ फैलाना उसे अच्छा नहीं लगता है। वह सोचता है - ''कहीं नौकरी मिल जाए तो कितना अच्छा हो जाएगा। गरीबी की यह दुर्दशा यह हीनावस्था,यह हाथ पसारना कब तक चलेगा? भगवान ! मुझसे सहा नहीं जाता।''8

घर की हालत देखकर नीरू तडप रहा है। खेती और घर पर कर्ज का बोझ बढ चुका है। कई साल की माल-गुजारी बाकी है।छोटी बहन लीला की शादी और छोटे भाई केशव की पढाई का सवाल सामने खडा है। इसलिए नीरू हुरदेखराय के यहाँ नौकरी करने लगता है। परंतु वहाँ चारों ओर भ्रष्टाचार देखकर नीरू उदास हो जाता है। माँ की बिमारी की खबर सुनकर नीरू छुट्टी लेकर गांव जाने लगा, तब रायसाहब ने दो महीने के वेतन के रूप में नीरू के हाथ पर दस रूपये रख दिए। यह देखकर नीरू का रायसाहब के यहाँ काम करने का उत्साह जाता रहा। इसी बीच नीरू की खेती पिछड जाती है। नीरू तडपता रहता है। अंत में रामनारायण कोइरी के द्वारा नीरू को सरैया मिल में नौकरी मिल जाती है। रोज आठ आने वेतन पर फागुन महिने तक उसकी नियुक्ति हो जाती है।

हर शनीचर के दिन नीरू घर आता है। और इतवार के दिन सरैया की ओर चला जाता है। ऐसे ही एक शनीचर को नीरू रात दस बजे अपने गांव की ओर आते हुए देखता है कि,दो-तीन चोर उसकी खेती उखाड रहे हैं। नीरू को लूटने के लिए चोर नीरू के पास आने लगते हैं पर नीरू की आवाज पहचानकर घबडाकर भाग जाते हैं।नीरू चोरों को पहचानता है। दूसरे दिन सुबह नीरू अपने प्रिय टीले पर जाकर बैठ जाता है। उसे संध्या की याद आती है। वह सुनहले सपनों में खो जाता है। दोपहर खाना खाने के वक्त नीरू की बहन लीला नीरू को सपने से जगाती है। नीरू यथार्थ की कठोर भूमि पर उतर आता है। उसे शाम तक सरैया पहुँचना है। वह हप्तेभर की सारी तनख्वाह माँ के हाथ रखता है और खुद आठ आने में हप्ता बिताता है। दोपहर चार बजे नीरू सरैया की ओर जाने लगता है और रास्तें में अपने कछार के कटु यथार्थ को देखकर मर्माहत हो जाता है। वह अपने क्वार्टर पर पहुँच जाता है। पुस का महीना है। वह ठिठुरते हुए जाडे की रात बिताता है। सुबह जल्दी उठकर डयुटी पर चला जाता है।

मिल का सीजन होली तक ही चलता है।इसलिए सीजन खत्म होते ही नीरू की नौकरी छुट जाती है। वह नीरू की तलाश में मलिंद के यहाँ आ जाता है। वह देखता है कि सुनिल नामक कोई युवक मलिंद और संध्या से बातें कर रहा हैं। नीरू संध्या के समक्ष अपने कठोर यथार्थ को प्रकट करता है कि वह संध्या के योग्य नहीं बन सकता है। वह परिवार को चलाने के लिए रोजी कमानेवाला एक मामुली आदमी बन गया है। संध्या नीरू के गले लिपट जाती है। दोनों की आँखें बरसने लगती हैं इतने में मलिंद आता है। दोनों मुँह धोकर चुप हो जाते हैं। नीरू मलिंद से नौकरी के संबंध में बहुत सारे आश्वासन पाकर सुबह घर लौट आता है।

''नीरू के जीवन की यह एक बहुत बडी विडंबना है कि अन्याय और अत्याचारों का विरोध

करते करते अंत में एक दिन स्वयं उस अमानवीय व्यवस्था का अंग बन जाता है जो अन्याय और अत्याचारों को जन्म देती हैं।'' 9

बिशनपुर के बाबू गज्रेंसिंह के यहाँ नीरू को महिने दो रूपये वेतन पर नौकरी मिल जाती है। नीरू का संवेदनशील हृदय गजेंद्रसिंह के दरबार की क्रूरता से कराह उठता है। परंतु नीरू को मन मारकर परिस्थिति के सामने झुकना पडता है। गजेंद्रसिंह नीरू को हरिपूर की छावनी पर भेज देते हैं। वहाँ लगान वसूल करने के लिए किसानों पर किये जानेवाले अत्याचार को देखकर नीरू का दिल फटा जाता हैं। परंतु चार-पाँच साल बीत जाने केबाद नीरू अपने काम में निपुण हो जाता है। उसे दरबार का वातावरण अच्छा लगने लगता है। मुंशीजी के दरबार छोडकर चले जाने के बाद अब नीरू मुंशीजी का काम करने लगा है। नीरू स्वभाव सें उदार है और अपनी उदारता के कारण वह दरबार के रीति-रिवाज बिगाड न दे इसलिए मुंशीजी नीरू को सलाह देते हैं। मुंशीजी की बात सुनकर पहले पहल नीरू को चीढ आती है। पर बाद में विचार करने पर उसे उसमें कोई बुरा नहीं लगता हैं। उसे पहले ही दिन फरवर्तियावन के दस रूपये मिल जाते हैं, तो उसे अद्भूत खुशी होती है। सरकार ने सब प्रकार के कर्ज माफ करने का कानून बनाया। फिर भी नीरू ने सारे कर्ज चुका दिए हैं। उसने सारा कर्ज चुकाकर मुखिया को नि:शस्त्र कर दिया है। वह मजबूर होकर किसानों की पिटाई भी करता है। पर बाद में अकेले में अपने कर्म पर रोता भी है। परंतु धीरे-धीरे उसे इन घटनाओं की आदत हो जाती है। लक्ष्मी का नशा उसपर छा जाता है। '' फिर भी चारों ओर नीरू की बडी तारीफ हो रही थी कि ऐसा मेहरबान तहसीलदार इस दरबार में नहीं आया था। ये गरीबों का दो-दो साल पुराना बकाया लगान छोड देते हैं, गरीबों से फरवर्तियावन भी नहीं लेते हैं। मदद माँगने पर सबको कुछ-ना कुछ देते हैं । लगान देकर चले जाओ तो रसीद घर भेज देते हैं। इतना भला आदमी तो इस दरबार में कभी कोई आया ही नहीं। नीरू सिपाहियों को भी संतुष्ट कर देता है।'' **10** इसलिए सिपाही भी उसे आदर और विश्वास देते हैं।

नीरू तेईस साल का हो जाता है। वरदेखुआ आते हैं, चले जाते हैं। पर नीरू टाल रहा है। क्योंकि अभी भी उसका मन संध्या के प्यार में अटका हुआ है। लेकिन वह बहाना बनाता है कि लीला की शादी करने के बाद ही वह शादी करेगा। वह लीला के लिए अच्छा वर देख रहा है। उसने अपनी बडी बहन उमा की करूण मृत्यु अपनी आँखों से देखी है। उमा के करूण कहानी की पुनरावृत्ति न हो इसलिए वह लीला के लिए अच्छा वर देख रहा है। लीला को अच्छा वर मिलता है और उसकी शादी हो जाती है। केशव मैटिक में फर्स्ट आता है। नीरू केशव को विश्वविद्यालय में पढने के लिए भेज देता है। केशव पढाई में तेज है तथा साहित्यकार भी है। नीरू खुद को केशव के रूप में देख रहा है। और सपना पूरा करना चाहता है।

नीरू सिपाहियों को किसानों को मारने का आदेश देता है। इतने में गांव से केशव की चिठ्ठी आती है कि संध्या की शादी हो रही है। चिठ्ठी पढते पढते नीरू सन्न रह जाता है। और किसानों को छोडने का आदेश देता है। छुट्टी लेकर अपने गांव आ जाता है। संध्या के अनुरोध पर नीरू संध्या की शादी होने तक रूक जाता है। संध्या के द्वारा समझाने पर शादी करने के लिए तैयार हो जाता है। और पटखौली के मुद्दीन पाठक की लडकी से नीरू की शादी हो जाती है।

1942 का आंदोलन जोरोंपर चल रहा है। नीरू के मन में भी क्रांति की आग में कूद पडने के विचार आ रहे हैं। वह नौकरी नहीं छोड सकता है। क्योंकि घर की जिम्मेदारी और केशव की पढाई का सवाल मुँह बाये उसके सामने खडा है। और गजेंद्रसिंह अंग्रेजों के पिठ्ठू होने से उनके यहाँ नौकरी करते हुए क्रांति की धारा में मिलना असंभव है। नीरू काँग्रेसी है और क्रांतिकारियों के गुप्त नेता के समान है। रात में नीरू की कोठरी में कांग्रेसी नेताओं के साथ गुप्त यंत्रणा होती है। और पूर्वयोजना के अनुसार स्टेशन पर हमला करनेवाले कांग्रेसी लोग नीरू के आनेपर भाग जाते हैं। स्टेशन मास्टर को लगता है कि, नीरू के आने से ही उनकी जान बच गई है। वे नीरू की प्रशंसा करते हैं। परंतु नीरू नकली राजभक्ति दिखाता है कि '' स्टेशन मास्टर साहब, इसमें कोई बात नहीं ,यह तो मेरा फर्ज था। हाँ, जनता पागल हो गई है, आप लोग जरा सावधानी से रहना।'' **11**

महेश की रिपोर्ट के आधारपर नीरू को आंदोलनकारियों के नेता के रूप में बंदी बना दिया जाता है। नीरू को लगता है कि उसकी जिंदगी सार्थक हो रही है। गजेंद्रसिंह के प्रयास से नीरू को निर्दोष रिहा कर दिया जाता है। पर इससे नीरू कुछ विशेष खुश नहीं होता है। अपनी छावनी पर वापस लौटते हुए नीरू सी.आय.डी. पुलिस सुपरिटेंडेंट की जान बचाता है। वह नीरू को घर ले जाता है। वह संध्या का पति सुनिल त्रिपाठी है। वहाँ नीरू की संध्या से मुलाकात हो जाती है। नीरू सोचता है कि संध्या से अब उसका कोई संबंध न रहनेपर भी परिस्थितियाँ उसे बार बार संध्या के यहाँ क्यों पटक देती है।

नीरू प्रगतिशील विचारों का तथा विधवा विवाह का समर्थक है। समाज के अत्याचार से तंग आयी हुयी और दर-दर की ठोकरें खानेवाली विधवा गुलाबी को बैजू अपनाता है। और गुलाबी को बेटा होनेपर गांव भर के लोगों को भोज के लिए आमंत्रित करता है। मुखिया के साथ सभी गांव के लोग इसे पापाचार कहकर बैजू के यहाँ खान-पान बंद करने का निर्णय लेते हैं। केवल नीरू बैजू की बात का समर्थन करता है और बैजू के इस पवित्र कार्य के लिए बैजू को बधाई देता है। तथा बैजू के यहाँ खुद खाने के लिए

तैयार होता है। '' मै जानता हूँ ,बैजू ने एक ऐसा काम किया है, जो आप लोगों के दिलों को धक्का मार रहा है, किंतु मै सोचता हूँ कि उसने दर-दर ठोकरें खाती हुई एक असहाय्य अबला को सहारा दिया है। साहस के साथ दुनिया की झूठी बदनामी की परवाह किए बिना एक नारी का हाथ पकडना और उसकी संतान को अपनी संतान के रूप में स्वीकार करना बहुत बडे पुरूषार्थ का कार्य है। बैजू ने आज एक पवित्र कार्य किया है। मैं उसे बधाई देता हूँ।'' **12**

बयालीस का आंदोलन ठंडा पडने लगता है। परंतु नीरू के मन में देशभक्ति की भावना दुगुने उत्साह से जाग उठती है। वह जमींदारी कार्यो सें ऊब जाता है। लेकिन वह यह सब केशव के लिए कर रहा है। उसे पत्नी भी उसके लायक नहीं मिली है। वह घर में फूट डालने का प्रयास करती है। नीरू का जीवन तबाह हो जाता है। वह सोचता है , '' यह बहु नहीं, घर तोडनेवाली राक्षसी घर में आयी है। न रूप, न गुण, न शील कैसे निबाह होगा उसके साथ। निबाह करना ही होगा, हिंदू ब्राहमण परिवार की बहु जो ठहरी।''**13**

नीरू चिडचिडा होने लगता है। वह किसानों पर निर्घृण अत्याचार करने लगता है। नीरू के नए रूप को देखकर किसान भयभित हो जाते हैं। केशव को नीरू का यह व्यवहार असहनीय हो जाता है। वह नीरू के सामने अपनी व्यथा प्रकट करता है। नीरू को लगता है कि केशव ने उसकी आँखें खोल दी है। नीरू वादा करता है कि अब आगे वह ऐसे अत्याचार नहीं करेगा।

मुखिया गजेंद्रसिंह के पास नीरू के खिलाफ चुगली करता है इसलिए गजेंद्रसिंह नीरू को पांडेपुरवा के पास की शिवपुर छावनी पर भेज देते हैं, और महेश को नीरू की जगह पर नियुक्त करते हैं। नीरू को यह बात बुरी लगती है। नीरू पिता की हरकतों से तंग आता है। वह खुद खेती बारी तथा घर परिवार की देखभाल करना चाहता है। इसलिए वह नये काम के साथ समझौता कर लेता है।

15 अगस्त 1947 का दिन है। भारत को सुराज मिल गया यह बात सुनते ही मुखिया जुलूस के आगे खडा होकर भाषण देता है और जुलूस के साथ गांव के फेंरी लगाने की बात कहता है। मुखिया जुलूस का नेतृत्व कर के आगे बढने ही वाला है ,इतने में वहाँ नीरू आ जाता है। गिरगिट की तरह रंग बदलनेवाले मुखिया को देखकर उसे क्रोध आता है वह मुखिया से कहता है कि महेश पर कुछ आरोप लगाए गए हैं और पुलिस महेश को गिरफ्तार करके ले गई है। यह खबर सुनते ही मुखिया जुलूस को छोडकर खाट पर धम्म से बैठ जाता है। नीरू भारतमाता की जयजयकार बोलते हुए जुलूस को लेकर आगे बढता है। सब लोग इस

राष्ट्रीय पर्व पर आनंद उत्सव मना रहे हैं। राष्ट्रगीत गाया जा रहा है। नीरू भाषण दे रहा है। अब आजादी मिल गई है। पानी की दीवारें टूट जाएँगी। बाहर से नयी रोशनी आएगी। कोई किसी का गुलाम नहीं रहेगा।

नीरू अपने आदर्शों, आस्थाओं और जीवंत व्यक्तित्व के कारण नायक का आभास देता है। वह उपन्यास में आद्यंत छाया रहता है, कथा के कई सूत्र भी उसीपर अवलंबित हैं। प्रारंभ में अपने आदर्शों एवं मान्यताओं के प्रति निष्ठावान, आस्थावान दिखाई देता है, परंतु बाद. में परिस्थितियों और अभावों ने बदलने के लिए विवश कर दिया है। वह चौंक कर पीछे देखता भी है और पश्चाताप भी करता है। उसका परिस्थितिजन्य परिवर्तन मनोवैज्ञानिक भी कहा जा सकता हैं।

'नीरू के इस रूपांतरण में लेखक के अपेक्षाकृत कुछ अधिक सूक्ष्म और गहरे संवेदनात्मक उद्देश समाहित हैं।'

'' लेखक कहीं गांव के शोषण दमन और आर्थिक विषमताओं आदि पर कोई वैचारिक बहस नहीं उठाता। लेकिन नीरू के चरित्र के माध्यम से वह जैसे गांव की चारित्रिक दुर्बलताओं को जन्म देनेवाली आर्थिक और समाजशास्त्रीय अनिवार्यताओं को उपन्यास की रूपगत मर्यादाओं में रहकर अनुभवात्मक स्तरपर उद्घाटन करता है।'' 14

मलिंद पांडेपुरवा जैसे कछार अंचल में एक ऐसा युवक है जिसकी शिक्षा दीक्षा ने उसे अपने गांव की विपरीत परिस्थितियों को समझने आँकने की विवेकपूर्ण दृष्टि प्रदान की है। वह अपने समाज की मूल असंगतियों को बडे निर्विकल्प दृष्टि से पहचानता है। परिस्थितियों के बीच विवश होकर भी दूसरों को कोरा उपदेश देनेवालों के प्रति उसे चीढ है। उसने दुनियामर के कायदे कानून, रीति -रिवाज की जानकारी कर ली है , इसीलिए रूढीग्रस्त व्यक्तियों को लक्ष्य करके वह कहता है '' ये गाँव की चार दीवारी में बंद रहनेवाले बकरे हमारे कानून और सभ्यता की बहस करेंगे। ये गीदड मुझे उपदेश देंगें क्योंकि ये बाबा हैं, चाचा हैं और जाने क्या क्या हैं साले।'' **15**

मलिंद जानता है कि सामाजिक स्तर पर उपेक्षित अभावग्रस्त और दलित लोगों में समता और स्वाभिमान की भावना जगाना ही स्वराज्य आंदोलन का प्रमुख ध्येय हैं। परंतु गाँव के लोग जाति-पाँति, छुआ छूत ऊँच नीच आदि भेदभावों में अभी भी जकडे हुए हैं इसलिए सही बात इन दकियानुसी लोगों के गले जल्दी नहीं उतरती। फिर भी उसे विश्वास है कि इसी तरह फूँक मारते मारते एक दिन आग अवश्य दहक

उठेगी।''

इतने पर भी मलिंद के इस सारे विवेक संतुलन और समझदारी का एक पढे लिखे आदमी की कोरी संतुलन सहानुभूति से अधिक कोई मूल्य नहीं है। क्योंकि वह अपने स्वार्थो को सिध्दातों का जामा पहनाकर दूसरों को अपने लिए इस्तेमाल करता है। गाँव के अंतर्गत संघर्ष के बीच वह मुखिया तथा बैजू का खुलकर विरोध नहीं करता। वास्तव में मलिंद के द्वारा प्रेरणा पाकर ही नीरू गाँव के इन कुटिल व्यक्तियों का विरोध करता है। परंतु पंचायत के अवसर पर मलिंदने स्वयं उपस्थित न रहकर उसने अपने बाप को भेजा।

इससे नीरू के मन में मलिंद को लेकर एक संदेह उत्पन्न हो जाता है वह यह कि'मलिंद'

उससे उस्तादी पढ रहा है। उसे भाड में झोंक कर खुद तमाशा देख रहा है। **16** वैसे नीरू की प्रतिभा और तेजस्विता को पहचानकर मलिंद नीरू से कहता है ''मैं सच कह रहा हूँ। मैं तुम्हें इसीलिए बहुत स्नेह करता हूँ कि तुममें प्रतिभा है, लगन है,निर्भिकता है और सबसे बडी बात सच्चरित्रता है।''मलिंद ने नीरू की पीठ थपथपाकर कहा -''तुम्हारा भविष्य उज्जवल है नीरू भाई। मुझसे जहाँतक होगा तुम्हारी मदद करूँगा।''**17**

जब नीरू मलिंद की अनुपस्थिति के बारे में अपने मन का संदेह मुलायम से मुलायम शब्दों में व्यक्त करता है तब मलिंद समझ जाता है कि नीरू के हृदय में कहीं संदेह उग आया है कि मैं उसे आग में झोंक कर दूर हो गया हूँ। इसलिए उसने अत्यंत बारीकी से काम लिया और उसने अपनी अनुपस्थिति के दो-तीन कारण दिए और उसे जैसे खुद पर अपने तर्कों पर अविश्वास था और एक को अशक्त समझकर दूसरा तर्क पेश करने लगा। मगर नीरू के चेहरे पर प्रसन्नता नहीं आयी। वह सोच रहा था कि जो मूल प्रश्न है उसका कोई समधान ही नहीं दिख रहा है। बैजू और मुखिया के दुर्व्यवहार का सामना करने के लिए कोई उपाय पूछने पर मलिंद ने कुछ सोचने का अभिनय करते हुए कहा - ''हमारी राय है कि गाँव के सारे नवयुवकों को इकट्ठा किया जाए और नवयुवक संघ बनाया जाए। वह नवयुवक संघ पुराने लोगों के अत्याचारों का मुकाबला करे।'' **18**

नीरू के गाँव के छोकरों के प्रति शंका व्यक्त करने पर मलिंद ने कहा - ''फिर भी देखा जाएगा। कोई न कोई उपाय तो करना ही होगा,इन गुण्डों के दमन के लिए। घबडाओ मत नीरू,मैं तुम्हारे साथ हूँ।'' **18**

प्रत्यक्ष में नीरू को मलिंद के सहाय्यता के आश्वासन के विपरीत अनुभव मिलता है। अभावों की मार से जर्जरित नीरू जब गोरखपुर पहुँचता है तो मलिंद जैसे उसे पहचानने से ही इन्कार करता है और इधर उधर की बातें करके खिसक जाता है। नीरू सोचने लगा कि क्या करूँ? इतनी साध से इनके यहाँ आया मगर इन्होंने तो बात भी नहीं पूछी मुझसे- ''बात करने में भी जैसे इन्हें अपमान मालूम पडता है। गाँव पर कितनी बडी बडी बातें करते हैं,प्यार जताते हैं, मगर यहाँ एक बार भी घर चलने को नहीं कहा।'' **19**

अंत में मलिंद एक अच्छा वकील बन जाता है। गाँव में रहकर भी वह एक प्रकार से गाँव के बाहर था, अब तो उसका गाँव के साथ कोई रिश्ता ही नहीं रह जाता। मलिंद के रूप में लेखक ने एक ऐसे ग्रामीण युवक का चित्र खींचा है,जो गाँव से पढने-लिखने के लिए शहर जाता है और अपने गाँव के साथ कोई भावनिक सामंजस्य नहीं रखता।

मलिंद के रूप में एक ऐसे पात्र की रचना की गई है, जो विचारों से तो प्रगतिवादी है,परंतु कथनी को करनी का जामा नहीं पहना सकता। आदर्शों को अमल में लाने की उसमें क्षमता नहीं है। वैसे तो गाँव के वातावरण में जन्म लेता है, वहीं पलता भी है गाँव की गतिविधियों से बहुत हदतक प्रभावित भी रहता है गाँव की समस्या के निराकरण के उपायों के बारे में सोचता भी है परंतु उन्हें प्रत्यक्ष में लाने में असमर्थ हो जाता है। इतना ही नहीं ,गाँव के परिवेश से नगर के परिवेश में आने पर गाँव को जैसे भूल ही जाता है और नगर का ही बन जाता है। गाँव के ऐसे युवकों के उदाहरण मिलते ही रहते हैं।

'पानी के प्राचीर' में **कांग्रेसी नेता गनपति पांडे** का परिचय निम्नलिखित शब्दों में दिया जा चुका है-''बाभन टोली के नेता थे गनपति पांडे। गनपति पांडे लम्बे और काले से अधेड उम्र के आदमी थे। मोटे खादी का कुरता-धोती और टोपी पहनकर कांग्रेसी जलसों में जब जाते तो इनके हाथ में उठा हुआ तिरंगा झंडा दूर से ही दिखाई पडता था। इनके मोटे-मोटे पैरों में बारहों मास बेवाई फटी रहती।---- एक ही अखबार को गनपति महीना भर लिए घूमते और अपनी छोटी-छोटी आँखों पर डोरे के फ्रेमवाला चश्मा लगाकर और लिलार सिकोड कर सबको सुनाया करते। गनपति पांडे बहुज्ञ आदमी थे-हिंदी जानते थे,उर्दू जानते थे और छोकरों को चकित करने के लिए अपने लबडे हाथ से धूल में बँगला और अंग्रेजी के भी अक्षर घसीट देते थे और अपनी विजय पर जब खिलखिलाकर हँसते तो उनके आगे के टूटे हुए दाँत उनकी हँसी में बडा भोलापन भर देते। नेता गनपति सत्यनारायण की कथा बाँधने के लिए अपने ओर दूसरे गाँवों की पगडंडियों पर गर्मी की दोपहरियों में दौडते हुए मिलते। नेता जी पत्रा भी देखते,कुण्डली भी भाखते,छान छा लेते,खपडा पाथ लेते , खाँची बना लेते, घर छा लेते और खेत खलिहान के सारे कार्य तो कर ही लेते ।

सार्वजनिक कार्यों तथा,शादी बारातों में अपने सिर पर बडी बडी गठरी भी ढोते,जरूरतें नागहानी गाने भी गा लेते और ढोलक पर थाप भी दे लेते। इसलिए नेता गनपति देहाती नेता होने के गुण रखते थे। '' **20**

इस प्रकार लेखक ने एक पात्र का न केवल बहिरंग रेखाचित्र ही खींचा है, बल्कि उसके चरित्र की सारी विशिष्टता को भी एक साथ अंकित किया है। लेखक ने जैसे गागर में सागर भर दिया है। पात्रों के प्रथम प्रवेश में ही उसकी सारी बारीकियों को गिनाने का सफल प्रयास है।

गनपति आजादी के आंदोलन में सक्रीय सहभागी थे। आजादी का आंदोलन जोरों पर था। गनपति अपने साथ बहुत से जवान और अधेड आदमियों को लेकर शाम को खाने पीने के बाद गाँव का चक्कर काटते हुए नारे लगाते भारतमाता की जय, गांधी बाबा की जय, जवाहरलाल नेहरू की जय। गनपति झगडालू स्वभाव के आदमी नहीं थे इसलिए मुखिया द्वारा गांधी नेहरू को दुर्वचन करने पर भी उनसे कोई कडा जवाब नहीं सूझा।

नेता गनपति प्रेम और अहिंसा में विश्वास रखते थे। गाँव में एकताहोना स्वराज्य के लिए आवश्यक मानते थे। इसलिए गाँव के दो टोलों के बीच होनेवाले संघर्ष की खबर सुनते ही दौडते दौडते फेंकू निरबल तेली आदि के पास जाकर समझाने लगे '' गान्ही जी का आडर है कि सुराज लेने के लिए हमें एक होना पडेगा। गान्ही जी का कहना है कि सुराज प्रेम और अहिंसा से मिलेगा ओर हमें मार खाकर भी अपने रास्ते से नहीं हटना चाहिए। '' **21** झगडा करनेवालों के पास जाकर उन्हें शांत करते हुए कहने लगे '' सान्त भाइयो सान्त। गान्ही जीका कहना है कि हिंसा बहुत बडा पाप है सुराज आपस में मेल रखने से होगा।'' **22**

आपस में भेद नहीं रखना चाहिए। जाति पाँति और मजहब को भूल कर एक हो जाओ। सभी लोग भारतमाता की संतान है। लढाई झगडा बंद करो, अहिंसा करो, अहिंसा करो। अहिंसा की जय। ''**23**

वे हमेशा लोगों की एकता के लिए प्रयत्न करते थे और हमेशा लोगों की एकता के लिए प्रयत्न करते थे और सारे अनर्थों की जड अंग्रेजी शासन को ही मानते थे। नेता गनपति के रूप में लेखक ने एक सच्चे सुराज सेवी अहिंसा प्रेम में आस्था रखनेवाले गांधीवादी व्यक्ति का चरित्र बडी आस्था के साथ खडा किया है।

हरिजन नेता फेंकू तिरंगा झंडा लेकर सुराजी का प्रचार करने निकलते थे। गाँव गाँव घूमकर वहीं खाना-पीना करते हैं, कुछ सुराजी गप्प लगाएँगे और शाम को झंडा और झोली को लहराते हुए बाजार में घूमते हैं और गांधीजी के नाम पर इधर उधर की दूकानों से साग भाजी मिठाई वसुल करते हैं। उनकी यह धारणा थी कि वे देश के लिए मरते हैं तो देश इनके लिए इतना भी नहीं करेंगा। नेता गनपति आदि के साथ जुलूस में शामिल होकर हरिजनों को समझाते हैं --'' भाइयों तुम भी करान्ती करो। सुराज अब मिल ही जाएगा। तब फिर क्या पूछना तुम्हारे पास भी खेत होंगे, मकान होंगे, तुम्हारे भी लडके इसकूल में पढने जाएँगें।''

फेंकू एक ऐसे व्यक्ति हैं जो अवसर देखकर अवसर से लाभ उठाने में तत्पर रहते हैं। तथाकथित नेताओं की ओर फेंकू के चरित्र द्वारा कटाक्ष किया गया है। फिर भी सुराज आंदोलन में इनका सहयोग निश्चित है। उन्हीं के सहयोगी हैं, निरबल तेली, भीखम गडेरी और दधिबल यादव आदि। लेकिन गाँव के इन नेताओं और लोगों में राष्ट्रीय जागरण के इस विराट अभियान की समझदारी कम, अपने आपसी वैमनस्यों को लेकर एक दूसरे को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति ही अधिक है। व्यवहार के स्तर पर नेताओं का जीवन भी गाँव के अन्य लोगों के समान ढुलमुल और निजी हानि लाभ की धारणाओं से परिचालित है। वास्तव में फेंकू की भूमिका निर्णायक हो सकती थी। वह गांधीजी के विचारों का प्रचारक है, साथ ही उस वर्ग का व्यक्ति है, जिसके अधिकारों के लिए संघर्ष की बात कहीं गयी है। लेकिन उसके ' यह तो आशनाई का मामला है' कथन से इस समस्या की धार कुंठित हो जाती है।

प्रतिक्रियावादी पात्रों में महेश, मुखिया ठाकुर भूपेंद्रसिंह और बैजू का उल्लेख किया जा सकता है। **मुखिया का लडका महेश** सरेआम संभ्रांत बहू बेटियों की इज्जत के साथ खिलवाड करता है। लोग देख सुनकर भी मौन रह जाते हैं। वासना के अंधे कई लोग जो अधिकतर महेश के साथी हैं, नारी विवशता का लाभ उठाने को तत्पर रहते हैं। वैसे महेश बचपन से ही दुष्ट प्रवृत्तियों से भरा हुआ हैं। स्कूल में वह नीरू के सामने हमेशा लज्जित होता है, इसलिए वह नीरू से बदला लेना चाहता है, पर नीरू से सीधे मुकाबला करना संभव नहीं है। महेश बचपन से ही दुष्टप्रवृत्तियों से भरा हुआ है। होली के अवसर पर वह अपनी इस वृत्ति का परिचय देते हुए कहता है --

'' तेली तोमली गाँव में इसीलिए होते हैं। हम लोगों का यह हक होता है कि उनकी चींजे होली में डाल दें।'' और वह निरबल तेली पर पिल पडता है ओर उसपर दो तीन लाठियाँ जमा देता है। तभी तो नीरू ने कहा - ' लफंगा नंबर वन है।'

नीरू और महेश में बचपन से लेकर सदा के लिए शत्रुत्व का भाव बराबर रहा है। महेश नीरू की गरिबी का मजाक उडाता है। फाग के अवसरपर महेश सजधज कर आया है महेश का ठाठ एकदम नया था। मलमल का नया कुर्ता, नयी धोती, मुँह में पान का बीडा, आँखों पर आठ आनेवाला हरा चश्मा। महेश नीरू की पीठ पर हाथ ले जाकर उसकी कमीज के फैले हुए मुँहों को चीरता हुआ बोला --'' अरे यार नीरू-- आज भी होली है आज तो जरा आदमी की तरह पहनते ओढते।'' **24** और उसकी अँगूलियाँ कमीज के एक छोर से दूसरे छोर तक करकराती हुई दौड गयीं। महेश का यह मजाक बहुतों को बुरा लगा, पर महेश मुस्कुराता हुआ चला गया। महेश अपने बल और धन के घमण्ड में किसी की नहीं सुनता था। इसीसे उसने रमेश पर चाकू की चोरी का झूठा आरोप लगाकर उसे खूब पीटा। आगे चलकर महेश घर से भाग जाता है और संयोगवश डाकू के हाथों से एक संन्यासी की जान बचाता है। संन्याशी की मदद से उसे सी,आई,डी, विभाग में नौकरी मिलती है। उसका गोरखपुर में तबादला हो जाता है और उसपर राष्ट्रीय आंदोलन की छानबीन करने की जिम्मेदारी सौंप दी जाती है। यहाँ भी महेश नीरू के प्रति शत्रुत्व का गुबार निकालने के लिए नीरू के खिलाफ झूठी रिपोर्ट देता है कि नीरू ही सारे उपद्रवों का नेता है। परिणाम स्वरूप षडयंत्र और नालायकी के कारण उसे डिसमिस किया जाता है। इस तरह उसे अपने कुकर्मों का यथोचित दंड मिलता है। अंत में पुलिस महेश को पकड ले जाती है।

पारिवारिक जीवन में भी उसकी दुष्टता का परिचय मिलता है। वह अपनी पत्नी के साथ भी दुर्व्यवहार करता है। लेखक ने महेश के रूप में एक दुर्व्यवहारी निकम्मे, षडयंत्रकारी युवक का चरित्र खडा किया है।

मुखिया प्रमुख प्रतिक्रियावादी पात्र है। वह अपनी विशाल भुजाओं के द्वारा गरीबो एवं साधारण जनों का शोषण करता है। उसकी अनेक अनैतिकताओं एवं अत्याचारों के बावजूद भी लोगों की आवाज अंदर ही अंदर उबलकर दब जाती है क्योंकि, सभी इनकी बोझ तले दबे हुए हैं। मुखिया सत्ता का प्रतीक है ,और वह किसी न किसी प्रकार नीरू को अपमानित और अवदमित करने का चक्र चलाये रखता है। उसका बेटा महेश भी होली में बूढे रामदीन को डालने का दोष नीरू पर मढकर तथा नीरू की कमीज फाडकर उसे निरंतर अपमानित करता रहता है। तो मुखिया उसका घर जलवाकर और खेत कटवाकर उसके लिए हैरानी और दुख उत्पन्न करता है। महेश के साथ झगडा होनेपर वह सुमेश पांडे के घर के सामने जाकर गर्जन-तर्जन के साथ गालियाँ बकते हुए कहता है-

'' कहाँ है नीरू साला आज हम उसकी हडडी पसली चूर कर देंगें। आज उस छोकरे को सबक

नहीं सिखाया तो मेरा नाम कुबेर नहीं।''

मुखिया बडा चतुर और षडयंत्रकारी है। बैजू द्वारा बिंदिया चमाइन को रखैल रखी जाने पर पहले तो गाँववालों को उसके खिलाफ उकसाता है। लेकिन बैजू का बडा हितैषी जताकर बैजू से गाँव भर को भोजन देने की बात चतुराई से लोगों के सामने रखता है और बैजू को अपने वश में कर लेता है। बिंदिया का घर उजाडने के लिए भी तत्पर होता है। जब बिंदिया उनके बेटे महेश की पोल खोलती है तो असे बडी भद्दी-भद्दी गालियाँ बकता है। यहाँ तक की बिंदिया जैसी नारी को लात जमाने से भी पीछे नहीं हटता। उसके चरित्र का यह बडा काला पहलू है।

आजादी का आंदोलन जोरों पर था। गाँव गाँव में उसकी लहर दौड गई थी। अंचल में दो दृष्टियों के बीच संघर्ष होता है। पात्रों का एक समूह आजादी और विकास की किरण को घर घर पहुँचाना चाहता है तो दूसरा इन किरणों को अपनी मुठ्ठी में बंद किए रखने के प्रयास करता है। मुखिया इस दूसरे वर्ग के प्रतिनिधि हैं। उसकी दृष्टि से आजादी की लडाई फालतू और बेवकूफी का काम है। उनका सवाल है - '' गांधीजी ने तो आँधी मचा रखी है। सारा धरम करम मिटाने पर तुले हुए हैं। चमार-बाभन कहीं एक हो सकते हैं ?''

मुखिया स्वार्थी है। इसीलिए अपने बेटे महेश की शादी में दहेज की लालासा रखते हैं। उनकी दृष्टि से दहेज केवल धन लाभ नहीं, प्रतिष्ठा की बात है। लेकिन महेश उनकी आशाओं पर पानी फेर देता है। परंतु अंत में सिंगापुरी जेंटलमैन उनकी पकड में ही आ जाता है। वह एक हजार की माँग पर बारह सौ देने को तैयार हो जाता है तो मुखिया अपने को दोष देते हैं कि डेढ हजार क्यों नहीं माँगे? मनुष्य के स्वभाव का एक उत्तम उदाहरण है। मुखिया सुख-दुख के चक्रव्यूह में फँसे।

मुखिया बडे गिरे हुए स्वभाव के थे। बडे निर्दयी थे। इसीलिए शामधारी की मृत्यु पर उसकी विधवा पत्नी गुलाबी के प्रति निर्मम व्यवहार करके कोर्ट से उसकी जमीन हडप लेने का षडयंत्र रचते है। पर गुलाबी ने उनके इरादों पर पानी फेर दिया।

मुखिया बडे अवसरवादी हैं। आजादी के आंदोलन का सदैव विरोध करनेवाले मुखिया आजादी के मिलते ही गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं और जुलूस में शामिल होने की निर्लज्जता दिखाते हैं। पर नीरू इनके इरादों पर पानी फेरता है और उनके बेटे महेश की गिरफ्तारी की खबर सुनाता है। वे फौरन वहाँ से

निकल जाते है। मुखिया के रूप में लेखक ने एक निर्मम , स्वार्थी षडयंत्रकारी कुचरित्रवाले व्यक्ति का चित्र खींचा है।

बैजू उर्फ बैजनाथ भी एक प्रतिक्रियावादी पात्र है। बैजनाथ ने अपनी पारिवारिक परंपरा से अनेक गुण प्राप्त किये थे। उन गुणों के कारण वह गाँव भर की घृणा का पात्र था और नाते -रिश्ते में भी उसका नाम बदबू करता था। वह अपनी ताकत और आतंक के कारण गाँव की किसी न किसी शक्ति को दबोचे रहता था , यानी गाँव के लोग दूसरों को परेशान करने के लिए उसे अपने में मिलाये रहते थे।

बैजनाथ गाँव भर का शत्रु था और गाँव भर का मित्र। सब उसकी काली करतूतों से डरते थे, इसीलिए किसी में खुलकर उसका विरोध करने की हिम्मत नहीं थी। गाँव का सबसे बडा समझे जानेवाले मुखिया की भी मजाल नहीं थी कि उसके सामने भला बुरा कहे। ऐसा नहीं था कि बैजनाथ के पास बडी शक्ति थी। बात इसके ठीक विपरीत थी। गाँव का कोई गरीब से गरीब,कमजोर से कमजोर आदमी भी उसे भला बुरा कहता,गाली-गुफ्ता देता तो वह वहाँ कुछ न कहता, किन्तु बाद में वह उसके घर सेंध लगा देता,घर फूँक देता,खलिहान या घारी में आग लगा देता,बैल चुरा लेता,कच्चे पक्के खेत काट लेता। लोग उसकी इन्हीं हरकतों से काँपते थे, और इसीलिए लोग इसे एक दूसरे के खिलाफ अपना शस्त्र बनाया करते थे। एक बार उसने मुखिया का भी घर फूँक दिया था, तो सोमेश पांडे के घर में भी शैतानी की थी। परंतु मुखिया के दुर्व्यवहार के कारण उसे पश्चाताप होता है और नीरू के सामने बाद में अपनी बदमाशी को स्वीकार कर कहता हैं -''भाई नीरू जो कुछ मैंने आपके परिवार के साथ किया, उसके लिए मैं दुखी हूँ। इस नीच मुखिया के बहकावे में आकर मैंने आपका घर फूँका, खेत काटे, खलिहान में आग का अंगारा रखा था। ------ मुझे कह लेने दीजिए,जिससे चित्त हलका हो जाय।'' **25**

बिंदिया के प्रति उसका व्यवहार उसके चरित्र को एक महानता प्रदान करता है। चमारिन बिंदिया को रखैल रखनेपर कडे विरोध के बाद भी उसका साथ नहीं छोडता। बाहर से बैजू गँवार और दुराचारी है, इसके बावजूद उसका आंतरिक हृदय कोमलताओं से बुना हुआ है। चारों ओर से ताने और अपमान मिलने पर भी बिंदिया को शरण देता है, यहाँ उसका सिरफिरा व्यक्तित्व दब जाता है,निश्छल स्नेह पाने के कारण। शामधारी की विधवा पत्नी गुलाबी के प्रति बैजू का व्यवहार बैजू को प्रशंसा का पात्र बनाता है। बैजू गुलाबी को टीसुन के हाथों से छुडाकर अपने यहाँ सहारा देता है। बैजू असहाय,पतित, विधवा गुलाबी को अपनाता है और गुलाबी के जब बेटा पैदा होता है, तब गाँवभर के लोगों को भोज के लिए बुलाता है। गाँव के लोग इसे पापाचार कहकर बैजू को बहिष्कृत करते हैं। केवल नीरू बैजू की बात का समर्थन करता है, खाना

खाने के लिए तैयार होता है और बैजू को इस पवित्र कार्य के लिए बधाई देते हुए कहता है-''मैं जानता हूँ, बैजू ने एक ऐसा काम किया है जो आप लोगों के दिलों को धक्का मार रहा है ; किन्तु मैं तो सोचता हूँ कि उसने दर दर ठोकरें खाती हुई एक असहाय अबला को सहारा दिया है। ----- उसे सहारा देकर बैजू ने जो मरदई दिखाई है,उसके लिए वह बधाई का पात्र है।------साहस के साथ ,दुनिया की झूठी बदनामी की परवाह किए बिना एक नारी का हाथ पकडना और उसकी संतान को अपनी संतान के रूप में स्वीकार करना बहुत बडे पुरूषार्थ का कार्य है। बैजू ने आज एक पवित्र कार्य किया है। मैं उसे बधाई देता हूँ।'' **26**

इस तरह लेखक ने बैजू के चरित्र चित्रण में कुछ नाटकीय परिवर्तन दिखाये हैं । प्रांरभ में प्रतिक्रियावादी पात्र बैजू के संबंध में एक निर्भत्सना का भाव हमारे मन में उठता है, परंतु बैजू के परिवर्तन ने उसके चरित्र को एक गरिमा प्रदान कर दी हैं। तभी बिंदिया के प्रसंग के संदर्भ में बैजू का विरोध करनेवाला नीरू गुलाबी के प्रसंग में उसका प्रशंसक बन जाता है।

इन पुरूष पात्रों के अलावा बेनी काका,धीमड, टीसून,दधिबल यादव,शामधारी गजेंद्र सिंह, निरबल तेली, केशव,सुदामा पांडे,छेदी घनश्याम तिवारी आदि अनेकों पात्र हैं जो आँचलिक उपन्यास के पात्र बहुलता की प्रवृत्ति को चरितार्थ करते हैं।

पुरूष पात्रों की अपेक्षा नारी पात्र संध्या,बिंदिया,गेंदा,गुलाबी के चरित्रांकन में लेखक ने अधिक अवकाश एवं सजगता का परिचय दिया है। उसमें भी बिंदिया एवं गेंदा का व्यक्तित्व अधिक तीक्ष्ण,स्वाभाविक एवं जीवन्त बन सका है। बिंदिया अपने चरित्र में जितनी यथार्थ और तीखी बन सकी है, उसके आगे कोई पुरूष पात्र खडा नहीं किया जा सकता।

बिंदिया बैजू के हलवाह की बेटी थी। वह छोटी-सी गुटकार-सी खूबसूरत लडकी थी। वह गाँव के छोकरों और जवानों के दिल में बस गई थी। हर आदमी उसके साथ छेडखानी करने का अपना सहज अधिकार समझता था। हर आदमी बिंदिया को अपने अपने काम पर खींचने की कोशिश करता। बिंदिया की चतुरता का उल्लेख करते हुए लेखक ने कहा है -''बिंदिया उस हवा के समान थी, जो सबकी छाती पर सिरहन बनकर लोटती चली जाती मगर हाथ किसी के नहीं आती। बिंदिया चमाइन थी और सौभाग्य से चतुर थी। जानती थी कि इन छोकरों और बूढे बैलों की आसक्ति केवल मेरी देह के लिए है। ---कैसे हैं ये बाभन कुत्ते रात में विष्टा तक खा लेंगे और दिन को ओठों पर पान की पीक पोत कर महकने की कोशिश करेंगे।'' **27**

समाज के उच्च वर्ग की उसने अच्छी खासी पोल खोल दी है। ऐसी बिंदिया बैजनाथ की रखैल थी इस के लिए बैजू को दारोगा की भी मार खानी पडी और गाँव के लोगों से भी दंड भुगतना पडा। पर बैजू अपनी बात पर अटल था।

एक बार मुखिया द्वारा बैजू को छोडने के लिए धमकाये जाने पर बिंदिया ने अपनी तीखी जबान में कहा था - 'अच्छा मालिक,अब मैं बैजू बाबा के साथ नहीं जाऊँगी,आपके यहाँ जाऊँगी।' मुखिया के गाली बकने पर घुटी हुई बिंदिया ने मुखिया के बेटे की पोल खोल दी। जब मुखिया चौकीदार,रग्घू,बेनी,टीसुन,धीमड,पपीहा आदि को साथ लेकर बिंदिया की झोंपडी उजाडने पहुँचा तो बिंदिया ने प्रारंभ में अपनेपर जब्त कर लिया परंतु उसका आहत अभिमान भभक पडा और उसने गाँव भर के सारे छोकरों का सारा कच्चा चिठ्ठा खोल दिया। महेश,धीरेंदर,छबीले,छेदी आदि सबका खरे खरे शब्दों में पर्दाफाश कर दिया। हर एक ने उसके साथ जो बदमाशी की थी उस का ब्यौरे वार बयान कर दिया सबको बेनकाब कर दिया। **28**

सब के चेहरे पर जैसे साँप सूंघ गया। इस समय बिंदिया एकदम तीखी और ज्वालामुखी लगती है। वैसे बिंदिया की शादी बचपन में ही हो चुकी थी लेकिन बिदा नहीं हो गई थी। तब से बिंदिया इसी गाँव में हर एक मनचले छोकरे की आँख को बनावटी हँसी से सींचती हुई लहराती चलती है। लोग उसे छिनाल कहते अपने नन की मँडास निकालते हैं क्योंकि वे सब अलग अलग जानते हैं कि आज तक उसने उनके मन की मुराद पूरी नहीं की। बिंदिया बैजू के सद्व्यवहार के कारण उस पर लट्टू हो गई और उस के साथ रहने लगी। बैजू के अपने अकेलेपन के दु:ख व्यक्त करने पर उसे आश्वस्त करती है -''अब तुम्हारे सिवा मेरा है कौन? गाँव के लोग हँसते हैं हँसा करें। मुझे उनकी क्या परवाह है ? ---- तुमसा कौन है बाबू ,जो एक चमाइन को दुनिया के आगे अपना ले ! ''**29** और बिंदिया खुले आम बैजू के घर की मालकिन हो गई।

बैजू बीमार हो गया। उसे प्लेग की बीमारी हो गई। बैजू डर गया। उसकी बगल में एक नारी बैठी है जो गिल्टी सेंक रही है। यह थी बिंदिया चमाईन। पहचान में ही नहीं आ रही थी। बडी दुबली हो गई थी,जवानी ढीली हो गई थी --- वह भूख प्यास की परवाह न करके बैजू की छाया की तरह उससे लिपटी हुई थी। उसे लोगों की गालियों की परवाह नहीं थी। बैजू को होश आ गया, बिंदिया अचेत हो गई। बैजू की आँखें खुल गईं,बिंदिया की आँखे बंद होने लगी बैजू की गिल्टी निकल गई और बिंदिया की जाँघ में गिल्टी निकल आयी,जैसे बैजू की गिल्टी को बिंदिया ने धीरे धीरे अपने स्पर्श से खींचकर अपनी जाँघ में डाल लिया था। बिंदिया चली गई। बैजू फटी फटी आँखों से बिंदिया को देखने लगा। बैजू के प्रति बिंदिया की निष्ठा

सराहनीय है।

गेंदा चहकती हुई,विहँसती हुई तितली है। गाँव के किसी भी कोने पर चमकती हुई वह चपला देखी जा सकती है। वह अनमेल विवाह,दहेज प्रथा का शिकार है। गेंदा बैजू की बहन है। दहेज देने के लिए बैजू के पास पैसे नहीं है, इसलिए बैजू गेंदा का ब्याह एक बूढक के साथ कर देता है और उसका परिणाम यह होता हे कि एक ही महीने के बाद गेंदा के विधवा हेने का समाचार मिल जाता है। गेंदा की माँ खूब रोयी चिल्लाई लेकिन गेंदा नहीं रोई,न चिल्लाई । उसने सखियों से कहा -''रोऊँ क्यों ? उसका मैं कुछ जानती हूँ?''**30** गाँव में कुछ दिनों तक गेंदा की इस बेशरमी की बडी चर्चा रही।

गेंदा का यौवन सँमाले नहीं सँभलता था। उसे न पति के मरने का गम था,न विधवा होने की उदासी,न दुनिया के नजरों से भय ,और संकोच न धर्म-कर्म की बेडी। वह स्वच्छंद खेतों-,खलिहानों,बाग-बागीचों और गाँव की गलियों,गुरसालों तथा बनियों की दूकानों पर चक्कर काटती फिरती। गाँववाले उसकी इस स्पर्धा पर जलते भुनते,आपस में कानाफूसी करते और उसे तरह-तरह की गालियाँ देकर आत्मसंतोष कर लेते। मगर गेंदा थी कि वह किसी की भी परवाह किये बिना फागुन की मस्त हवा की तरह हरहराती,सबकी छातियों को रौंधती चली जाती। गेंदा विधवा के संबंध में हमारे समाज में प्रचलित जो गलत धारणाएँ हैं उनका शिकार बन जाती है। लोग विधवा का मुँह देखना अशुभ मानते हैं। यहाँ तक कि उसका भाई बैजू भी शुभ-अशुभ के चक्कर में पडकर एक दिन उसे लात जमा देता है।और कहता है,''चुप से कहीं बैठती ही नहीं जहाँ कहीं शुभ साईत पर निकलो कि रास्ता छेंककर खडी है गेंदा महारानी। आज मैं कितने बडे काम से जा रहा था,लेकिन इस राँड ने असगुण कर दिया।''**31**

आज गेंदा को पहली बार ज्ञात हुआ कि वह राँड है,अकेले में बैठकर देर तक रोती हुई सोचने लगी- ''मैं राँड हूँ, लोग मेरा मुँह देखना पाप समझते हैं। शायद इसीलिए लोग कहीं जाते वक्त मुझसे बचने की कोशिश करते है और यदि संयोग से दिखाई पड गयी तो लोग लौट जाते हैं ----- तो मैं अभागिनी हूँ, डायन हूँ, आदमी खाती हूँ और तो और मैं अपना ही मरद खा गयी। मेरा मुँह देखना भी पाप है। मैं राँड हूँ ---- राँड हूँ, राँड हूँ,राँड हूँ।''**32**

आज उसे ऐसा मा लूम हुआ कि वह विधवा है। उसके ऊपर साये के रूप में एक पति था सो उठ गया है। उसे मालूम हुआ कि उस बूढे पति का भी अस्तित्व कितना मूल्यवान था,''अब मैं क्या करूँ? क्या करूँ अपनी इस भरी जवानी का ? इसे कहाँ उतार फेकूँ ?''**33.**

इस तरह ''गेंदा के स्वच्छंद यौवन पर एक बोझिल धूँध-सी छा गयी। वास्तविकता के बोध ने उसकी उन्मुक्त पाँखों को बाँधकर धरती पर झुका दिया। अब वह कुछ उदास-उदास सी रहने लगी। उसकी स्वछंद बहनेवाली मस्ती पर बोझिल गांभीर्य का एक काला साया छा गया।''**34**

वह वैधव्य का नारकीय जीवन भोगती हुई गंभीर और मूक रहने लगती है। माँ ने उसे पूजा-पाठ,भजन-भाव में अपना मन लगाने के लिए कहा।''गेंदा ने पूजा-पाठ में मन रमाया। सुबह होते-होते नहा धोकर वासुदेव और शंकरजी की पूजा पर बैठ जाती,हाथ जोडकर घंटों किसी भाव में तल्लिन रहती---- -- गाँव में शोर हो गया कि गेंदा इतनी सती-साध्वी स्त्री है कि अपने देवता के समान पति के पीछे पागल हो गयी है और अब देवी-देवताओं की शरण में जाकर दुनिया को भूल बैठी है। कैसी आवारा लडकी थी किंतु अब तो साक्षात देवी हो गयी है।''**35**

परिणामत: गेंदा सूखती जाती है। गेंदा अभी तक तो जिव्हा से बोलती थी पर अब वह सब सहन करते-करते सूखती जाती है। रामदरश मिश्र के शब्दों में -

''उसकी देह का मांस सूख रहा है। नसें उभर आयी हैं, आँखें धँसी जा रही हैं। आँखों के नीचे काली-काली परतें बिछ गयी हैं।---------मगर विधवाओं केलिए सूखकर काँटा हो जाना ही ठीक है। उसका चटक-मटक,सजावट और उसका मोटा होना कुलच्छन है। पति नहीं है तो विधवा जीकर ही क्या करेगी ? उसे मर ही जाना चाहिए घुट-घुट कर। पता नहीं जिंदा रहने पर कब उसके पाँव उँचे-नीचे पड जायें। गेंदा पति की याद में जल-जल कर सती हो रही है। वाह री गेंदा। '' **36** उसके चरित्र से करूण संवेदना ही उत्पन्न होती है।

गुलाबी शामधारी की विधवा पत्नी है। वह बडी कोमल,सुंदरी और गोरी औरत है। जब उसकी शादी हुई और वह ससुराल आई तब से लोग उसकी एक झलक पाने के लिए उसके घर के पास से छिप-छिपकर गुजरते थे। लेखक ने उसके व्यक्तित्व का चित्रांकन निम्न शब्दों में बडे आदर के साथ किया हे -

''वह संयम की मूर्ति की भाँति दामन बटोरे हुए चलती थी। पूजा पाठ करती,बडों के सामने घूँघट निकाल लेती थी। किसी की ओर देखे बिना उससे काम की बातें करती थी। हरवाहों -चरवाहों से भी संकोच से बोलती थी। वह वैधव्य की श्वेत प्रतिमा जैसी पूज्य और दिव्य लगती थी।'' **37**

गुलाबी टीसुन की चाची है।फिर भी टीसुन के व्यवहार से गुलाबी उसकी नीयत के बारे में साशंक

थी और सचमुच ही टीसुन ने अपने संयम का बाँध टूटने पर चाची का हाथ पकड लिया तब गुलाबी ने उसे लात मारकर निर्भत्सनापूर्ण शब्दों में कहा-

''निकल जा नरक के कुत्ते,तुझे चाची और माँ का भी ख्याल नहीं है।'' **38**

टीसुन प्रतिहिंसा की भावना से भडक उठता है। वह तरह-तरह से गुलाबी को तकलीफ देने लगता है। गुलााबी का जीवन दिन-प्रतिदिन कष्टमय बनता जाता है। शामधारी के विवाह के अवसर पर मुखिया गुलाबी के पास तकाजा कर चुका है और उसके खेत हथियाने के लिए मुखिया कोर्ट में नालिश करता है और गुलाबी के खेत पर कब्जा करके रूपया वसूल करने की व्यवस्था करता है। गुलाबी अपने गहने और घर की बची-खुची सारी चीजें बेचती है और रूपये चुकते करती है। परंतु अब वह खायेगी क्या? इसलिए वह काशी के अपनी बहनोई के पास जाने का निर्णय लेती है। वह दोहरी स्टेशन में रहनेवाले पांडेपुरवा के पंडित केदार पांडे,जिसे लोग टमटम पांडे कहते हैं और जो गुलाबी के देवर लगते हैं,के यहाँ जाती है । टमटम पांडे कहते हैं,''भौजी,अब जो होना था सो हो गया। यह प्राण बडा पतित है निकलता ही नहीं। अरे, अब अपने तन की सँभाल करो खेत-बारी देखो,बहुत लाज-शरम करने से पाँडे पुरवा गाँव तुम्हें खा जायेगा।'' **39**

गुलाबी टमटम पांडे के यहाँ पंद्रह दिन रहकर बनारस अपने बहनोई के यहाँ चली जाती है। वहाँ दो महीने रहती है। उसे महसूस होता है कि टमटम पांडे और बहनोई में कोई मौलिक अंतर नहीं है। सभी पुरूष एक जैसे ही दिखाई देते हैं,एहसान जताकर संकट में फँसी स्त्री को अपनी वासना का भक्ष्य बनाते हैं। पांडेपुरवा वापस आने के बाद भी गुलाबी यही अनुभव करती है। एक दिन टीसुन और गुलाबी में कहा-सुनी शुरू होती है। टीसुन गुलाबी की पिटाई करने लगता है। सभी लोग केवल तमाशा देखते रह जाते हैं। इतने में बैजू वहाँ आता है और गुलाबी को टीसुन के हाथ से छुडाता है। वह गुलाबी को सहारा देता है। बैजू असहाय,पतित,विधवा गुलाबी को अपनाता है और गुलाबी को जब बेटा पैदा होता है, तब गाँव भर के लोगों को भोज के लिए आमंत्रित करता है। गाँव के लोग इसे पापाचार कहकर बैजू के यहाँ खान-पान बंद करने का निर्णय लेते हैं। मुखिया भी बैजू के खिलाफ हो गया है। केवल नीरू बैजू की बात का समर्थन करता है और बैजू के इस पवित्र कार्य के लिए बैजू को बधाई देता है। नीरू की बात से मुखिया तिलमिला उठता है और मुखिया तथा गाँववाले नीरू से कहते हैं कि तुम गाँववालों पर वासना का लांछन लगा रहे हो। गुलाबी के पीछे लगे हुए किसी एक आदमी का नाम बता सकते हो ?

''मैं बताती हूँ '' कहती हुई गुलाबी वहाँ आ धमकी। सभी लोग स्तब्ध से रह गये। कितनों की

निगाहें झुक गयीं। वह हिम्मत से कहती गयीं -

''अब जब मैं इतनी दूर निकल आयी हूँ या आप लोगों ने निकलने पर मजबूर कर दिया है तो सारा लेखा-जोखा देने में क्या हर्ज ? मैं जानती हूँ एक-एक का नाम,जिन्होंने मुझे जबानी सहानुभूति देकर खरीदना चाहा। नरक के कीडे वे लोग हैं जो दूसरों की साफ-पाक देह पर चढकर बिलबिलाया करते हैं। मैं जानती हूँ उन लोगों को जो केवल मेरे साथ छिपकर खेलवाड करना चाहते थे, हिम्मतपूर्वक मेरा हाथ पकडना नहीं।मैं तुम लोगों के इशारे पर लट्टू की तरह नाचते रहने के बजाय एक मरद करके बैठ गयी हूँ तो तुम लोगों की छाती पर साँप क्यों लोटता है ? बडा धरम-धरम चिल्ला रहे हैं आप लोग। चाची की बाँह पकडकर खींचना कहाँ का धरम है, टीसुन से पूछिए और -----'' **40**

इस प्रकार गुलाबी के रूप में एक भावुक,चरित्रवान और निर्भिक युवती का चरित्र रेखांकित किया है। थोडीसी गतिविधियों के बावजूद भी गुलाबी हमपर अपनीअमिट छाप छोड जाती है। लेखक ने भी उसके चरित्रांकन में बडी आत्मीयता का परिचय दिया है।

संध्या नीरू की प्रेमिका है। वह घनश्याम तिवारी की बेटी है। लेखक ने नीरू और संध्या का परिचय होली के अवसर पर संध्या द्वारा नीरू के गालों पर अबीर मलते समय दिया है। नीरू की दृष्टि से,''स्निग्ध चमकीला मुँह जिसपर चाँदनी बिछल रही थी। बडी-बडी मासूम आँखें----स्वस्थ गोरी - गोरी देह जिसपर एक महीन वासंती साडी खिल रही थी जिसपर रंगों के गुलाब उभर आये थे। वह मुस्करा रही थी मानो जोत्सना में नहाती हुयी स्वयं संध्या ही उतर आयी है।'' **41**

बातों के दौरान नीरू ने अपनी गरीबी का उल्लेख किया जिसे संध्या बातों में उडा देती है। संध्या नीरू से मन से प्रेम करती है परंतु नीरू अपनी गरीबी से चिंतित है इसीलिए वह संध्या से कहता है -'हमारा तुम्हारा संबंध न जाने कब टूट जाय क्योंकि मैं अत्यंत गरीब हूँ और तुम धनी,तुम्हारे माँ -बाप मेरे साथ-----।'

संध्या ने इस बात पर कभी सोचा ही नहीं था मगर उसके भोले-भोले दिल ने उत्तर दिया-''इसमें क्या पाप है,किताबो में तो लिखा है कि,धन से बडी चीज आदमी का गुण है,उसकी पूजा होनी चाहिए। और मैं तो तुम्हारे समान स्वस्थ,विद्वान,दयालु और मेहनती किसीको देखती ही नहीं मुझे तुम्हारे ऊपर घमंड है नीरू।'' **42**

गाँव में पढाई का उचित प्रबंध न होने के कारण संध्या गोरखपुर जाने लगती है तो नीरू को यह आशंका होती है कि कहीं शहर जाकर उसे भूल तो नहीं जायगी। इससे नीरू की आँखें आर्द्र हो गयीं।

संध्या गोरखपुर चली जाती है। घर की जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए पढाई बंद करके नौकरी ढूँढने के लिए नीरू गोरखपुर पहुँचा तो संयोगवश उसकी संध्या से भेंट हो गयी। संध्या को देखकर नीरू को लगा,''कितनी मोहक है संध्या ! शहरी श्रृंगार पाकर यह देहाती स्वस्थ सौंदर्य कितना खिल गया है ! उसमें कितनी शालीनता आ गयी है।''**43**

जब संध्या को यह पता चलता है कि नीरू प्राइमरी स्कूल की मास्टरी के चुनाव के लिए आया है तब वह चौंक उठती है और नीरू से कहती है,''तुमने अपने सारे सपनों का गला घोट दिया नीरू ! तुम्हारे जैसे होनहार लडकों पर ही तो देश का भविष्य है मेरे मन में तुम्हारे भविष्य की पता नहीं कितनी सुंदर-सुंदर रंगीन तस्वीरें हैं ओह नीरू ! तुम यह सब क्या कर रहे हो ?'' **44**

नीरू ने उन तस्वीरों को फाड देने के लिए कहा और कहा कि तुम्हारा नीरू गरीबी की कब्र में अपने सुंदर भविष्य को दफनाने जा रहा है।तब संध्या फफककर रो पडी। नीरू की सहाय्यता करने के लिए इच्छा होने पर भी वह कुछ भी नहीं कर सकती। कुछ दिनों के बाद नीरू को अपने भाई केशव से पता चलता हे कि संध्या का विवाह हो रहा है। नीरू उद्वीग्न हो गया। संध्या से मिलने पर नीरू ने संध्या के सामने अपनी असमर्थताको दिखाते हुए संध्या -शहर के मुखर वातावरण में विकसित संध्या इस समय चुप थी उसने केवल यही कहा -

''मुझे माफ करो नीरू मुझे तुमसे हमेशा- सहानुभूति रही लेकिन परिस्थितियाँ हम दोनों को ऐसे दो छोरोंपर खींचती गयी कि---कि---कि।''**45**

वास्तव में शहर में जो-जो उसकी आँखों के सामने जीवन की रंगिनी और गरिमा खुलती गयी वह उधर को अनजाने ही आकृष्ट होती गयी और उसे एक दिन मालूम पडा कि उसके हृदय में एक दूसरे युवक की तस्वीर अंकित हो गयी है, नीरू का चित्र धीरे-धीरे धुमिल पड गया है।

संध्या के रूप में लेखक ने एक ऐसी नारी का चित्र खडा किया है जो परिस्थितियों के अनुसार अपने चरित्र में परिवर्तन लाती है।इन नारी पात्रों के अतिरिक्त नीरू की माँ,नीरू की बहन लीला,चमेली आदि साधारण चरित्रों की भी झलक दिखाई है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि 'पानी के प्राचीर' के विविध एवं बहुल पात्र नदी की छोटी-बडी लहरों की माँति हैं जो लहराते हैं,परस्पर मिलते हैं,टकराते हैं,अलग-अलग दिखायी देते हैं। लेकिन नदी से अलग नहीं होते। मलिंद और संध्या को छोडकर सारे पात्र लहरों की माँति पांडे पुरवा नदी के व्यक्तित्व को विविध आयामों एवं कोणों में प्रस्तुत करते हैं।

''रामदरश मिश्र के 'पानी के प्राचीर' 'जल टूटता हुआ' और 'सूखता हुआ तालाब ' इन आँचलिक उपन्यासों के सभी पात्र गोरखपुर के कछार-अंचल की मिट्टी से निर्मित और वहाँ के हवा-पानी से पोषित अभिशापों के खरोंच अपने तन और मन पर झेले हुए हैं।''46

इनमें अंचलीय समाज के विभिन्न वर्गों के पात्र हैं,पर वे केवल अपने अपने वर्गे के प्रतीक या प्रतिनिधि बनकर ही नहीं आए हैं। उनमें से अधिकांश व्यक्ति भी हैं, अपनी वैयक्तिकता और चारित्रिक विशेषताओं से युक्त। उच्चवर्गीय पात्रों में यह वैयक्तिक विशिष्टता नहीं के बराबर है लेकिन मध्य और निम्न वर्गीय पात्रों में इसकी झलक पूरी मिलती है। 'पानी के प्राचीर' का जमींदार गजेंद्रसिंह और 'जल टूटता हुआ' का महीपसिंह केवल नाम से ही दो भिन्न व्यक्ति हैं,इनका अंतर और बाहय एक जैसा ही है। गजेंद्र सिंह पांडेपुरवा से दूर गाँव के हैं इसलिए पांडेपुरवा के सामाजिक जीवन पर उनके कुकृत्यों का प्रभाव नहीं दिखाई देता है पर अपने इलाके में उनकी कार्रवाइयाँ वही है जो तिवारीपुर में महीपसिंह की। एक स्वतंत्रतापूर्व का जालिम और अत्याचारी जमींदार है तो दूसरा जमींदारी उन्मूलन के बाद का टूटा हुआ पर अपनी पुरानी आदतों और हथकंडो से बाज न आनेवाला जमींदार। फिर भी दोनों के चरित्र में अद्‌भूत साम्य है और वे अपने वर्गीय चरित्र के ही प्रतिनिधि हैं। 'पानी के प्राचीर' का प्रधान पात्र नीरू एक आदर्श के साँचे में ढाला गया है। निम्नमध्यम वर्गीय परिवार की सारी अर्थिक विवशताओं ,झूठी सामाजिक प्रतिष्ठा का मोह,बेकारी और व्यापक टूटन का शिकार नीरू जीवन भर उच्च आदर्शों के पीछे गाँव की प्रतिकूल परिस्थितियों और प्रतिक्रियावादी शक्तियों से लडका रहता है। नीरू इस घनघोर अनास्था,टूटन और मानवता के अवमूल्यन के युग में भी गंभीर रूप से आस्थावान आशावादी ,संघर्षशील और आदर्शवादी हैं।इसके आंतरिक और बाहय संघर्षो तथा वैयक्तिकता के साथ सामाजिकता के टकरावों का बडा ही बेजोड चित्रण लेखक ने किया है।

उपन्यासकार का उद्‌देश संपूर्ण अंचल की बहुआयामी जिंदगी के हर अच्छे बुरे पहलू को दिखाकर उसकी संपूर्णता को चित्रित करना है, इसलिए सामाजिक जीवन के हर पक्ष को उजागर करनेवाले पात्र आये हैं। ये पात्र अपने अपने वर्ग के प्रतिनिधी भी हैं, पर कुछ पात्रोंमें अपनी वैयक्तिक विशिष्टताएँ भी उभरकर

आयी है। बैजू, बेनीकाका, रग्धूबाब सुमेश पांडे, महेश, मलिंद, संध्या, बिंदिया, गुलाबी आदि कुछ ऐसे ही पात्र हैं जो वर्गीय चरित्र के साथ साथ कुछ वैयक्तिक वैशिष्टय से भी संपन्न है।

मिश्रजी के उपन्यासों में पात्र वर्ग के प्रतिनिधि बनकर आयें हैं पर मिश्रजीने पात्रों को अच्छे और बुरे दो खानों में बाँटकर ही उनका चित्रण किया है। उच्च वर्ग के पात्र प्राय: सभी बुरे हैं- गजेंद्रसिंह, महेश मुखिया आदि मध्यवर्ग और निम्नवर्गीय पात्रों में भी अच्छे और बुरे पात्रोंका अलग अलग वर्ग बन गया है और जो अच्छे हैं वे शुरू से अंत तक अच्छे ही हैं। नीरू अच्छा और आदर्श पात्र है।

लेखक ने गाँव के लोगों की विकृतियों का बडी निर्ममता से चित्रण करता है। इसका अर्थ यह नहीं कि उसमें उन लोगों के प्रति गहरी सहानुभुति और करूणा नहीं। इसके विपरीत शायद इस रचना के मूल में पांडेपुरवा के लोगों के प्रति लेखक की गहरी रागात्मक संपृक्ति ही है। गेंदा , बैजू, धीमड, बेनीकाका सभी लेखक की करूणा के पात्र हैं। बैजू की पशुता के नीचे दबा छिपा उसका मानवीय चेहरा लेखक हमारे सामने बखूबी उद्घाटित कर देता है। खेत की फसल उखाडते हुए पकडे जाने पर धीमड की दयनीयता पर हमारे मन में क्रोध के स्थान पर करूणा ही अधिक उपजती है। उन पात्रों के संबंध में यही बात साफ उभर आती है कि यें सभी लोग कठोर परिश्रम करते हैं। पर उनके परिश्रम का फल या तो नदियाँ हडप कर जाती हैं या जमींदार , मुखिया सरकारी अफसर आदि। इनके हिस्सें सिर्फ श्रम बचता है। पांडेपुरवा के लोग अपनी शोषण करनेवाली ताकतों की पहचान नहीं रखते परिणामत: उन लोगों के मन में उनके प्रति तीव्र घृणा अथवा आक्रोश का भाव निर्माण नहीं होता। लेखक ने जिस परिवेश और जिन लोगों की समस्याओं को उठाया हैं उनमें इस प्रकार की वैचारिक समझदारी का न होना ही स्वाभाविक लगता है। लेखक उपन्यास के पात्रों पर अनावश्यक रूप में अपना मतवाद आरोपित नहीं करते, लेखक की कलात्मकता का यह परिचायक है।

'' मिश्रजी ने सैध्दांतिक पूर्वाग्रहों से बचकर पांडेपुरवा गाँव की अपराजेय संघर्षशील चेतना को लोगों की रोज-ब-रोज की जिंदगी की क्रियाशीलता में खोजनें का प्रयत्न किया है। फिर उनकी मन:स्थिति के भीतर झाँकता हुआ कहता है -'' मगर फिर भी उनके मन के भीतर एक उम्मीद है जो कभी साथ नहीं छोडती, शायद अब भी कुछ हो जाए।''

'पानी के प्राचीर' एक पिछड़े हुए अंचल के अभावग्रस्त लोगों के जीवन की इसी उम्मीद की रचनात्मक तलाश है, व्याख्या भी। '' 47

आँचलिक शिल्प विधान के अनुरूप उपन्यास में बहुपात्रों की योजना की गई है, क्योंकि उससे चुने गए या चित्रित अंचल की सचाइयों को अपने बहुविध रूप में प्रकट किया जा सके। विविध पात्र अपने अलग अलग व्यक्तित्व चित्रों के द्वारा पांडेपुरवा गाँव का विविधता एवं समग्रता में स्पंदित एवं उजागर करते हैं।

उपन्यास में चरित्र विधान में प्रतीकात्मकता का भी प्रयोग किया गया है। विभिन्न घटनाएँ क्षेत्रीय जीवन के सुखदुखों को प्रतिकायीत करती हैं। उपन्यास का प्रमुख पात्र नीरू शोषित वर्ग एवं नवचेतना का प्रतीक हैं। मुखिया और उसका बेटा महेश शोषकों के प्रतीक हैं। मुखिया सत्ता का प्रतीक है, वह किसी न किसी प्रकार नीरू को अपमानित करने के प्रयास में है। मलिंद नागरिक सभ्यता का प्रतीक है वह आत्मकेंद्रित है, वह स्वयं तो गाँव से सम्मान चाहता है पर उसके लिए वास्तव में कुछ करने के अवसर पर पीछे हट जाता है शहर जाते समय नीरू का अंगोछा कुत्तोंद्वारा चीर फाड दिया जाता है। समस्त घटना शोषण की प्रक्रिया का प्रतीक है। ग्राम इसी प्रकार शोषकों के द्वारा शोषित होते हैं।

संक्षेप में विभिन्न पात्रों के चरित्र चित्रण में लेखक को बहुत हदतक सफलता मिली है।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत अध्याय में 'पानी के प्राचीर' उपन्यास के पात्र और उनके चरित्र-चित्रण पर विवेचन किया है। आँचलिक उपन्यास के विधान के अनुसार पात्रों की बहुलता के यहाँ दर्शन होते हैं। अध्याय के प्रारंभ में पात्रों की दृष्टि से आँचलिक उपन्यास की कुछ विशेषताओं का विवेचन किया गया है और उसके उपरांत विभिन्न पात्रों का चरित्र-चित्रण किया गया है। प्रारंभ में पुरूष पात्रों में से नीरू, मलिंद, नेता गणपति हरिजन नेता फेंकू, मुखिया,महेश, बैजू आदि पात्रों का विस्तृत चरित्र-चित्रण किया गया है। शेष पुरूष पात्रों के संबंध में सामान्य जानकारी दी गयी है। इनमें प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी पात्रों का समावेश है।

नारी पात्रों में बिंदिया, गेंदा, गुलाबी और संध्या का विस्तृत चरित्र-चित्रण किया गया है। इसमें इन पात्रों के चरित्र की बारीकियों का विवेचन किया गया है। नीरू प्रधानपात्र है और नायकत्व का आभास देता है। नीरू पढने में होशियार है और उसमें गहरी मानवीय करूणा और उदारता है। सबसे बडी बात यह है कि वह शोषण और दमन का, अन्याय अत्याचारों का खुलकर विरोध करता है। परंतु उसके चरित्र की यह विडंबना है कि अन्याय और अत्याचारों का विरोध करते-करते एक दिन स्वयं उस अमानवीय व्यवस्था का अंग बन जाता है। परंतु उसका यह अमानवीय व्यवहार उसे चैन नहीं लेने देता। वह आगे चलकर स्वतंत्रता

आंदोलन का भी एक हिस्सा बन जाता है। उसके चरित्र का यह परिवर्तन मानवीय है। नीरू के रूप में लेखक ने एक आशावादी आस्थावान व्यक्ति का चित्र खींचा है। मलिंद एक ऐसा युवक है जो प्रगतिशीलता का आभास देता है। वह अपने स्वार्थों को सिध्दांत का जामा पहनाता है। शोषण और अत्याचार के विरूध्द वह बातें करता है। गाँव के सुधार की कुछ योजनाएँ भी प्रस्तुत करता है परंतु अपनी इस कथनी को करनी में परिवर्तित नहीं कर सकता। शोषण अत्याचार का वह खुलकर विरोध नहीं करता। पढाई के लिए गोरखपुर जाने के बाद वह एक अच्छा वकील बन जाता है और उसका गाँव से कोई रिश्ता ही नहीं रह जाता।

मुखिया षडयंत्रकारी है। वह शोषण ही करता रहता है। महेश प्रतिक्रियावादी पात्र है। प्रारंभ से अंत तक वह कुव्यवहार और हथकंडे ही करता है। वह नीरू के संबंध में झूठी रिपोर्ट प्रस्तुत करता है। और परिणाम स्वरूप अपनी नौकरी से हाथ धो बैठता है। उसका जीवन विद्रुपताओं से भरा हुआ है।

बैजू गाँव का गुंडा है और गाँव भर में बदनाम परंतु बिंदिया और गुलाबी के प्रति उसका व्यवहार उसे महानता प्रदान करता है और नीरू की बधाई का पात्र हो जाता है। अन्य पुरूष पात्रों की झलक दिखायी गयी है।

नारी पात्रों में बिंदिया चमारिन बैजू की रखैल है। वह सबकी निर्भत्सना का शिकार बनती है। अपना घर उजडते समय गाँव के अधिकांश लोगों के नकाब उलटती है यहाँ बिंदिया एकदम तीखी और ज्वालामुखी लगती है। गेंदा चहकती हुई स्वच्छंद तितली है वह दहेजप्रथा का शिकार है। अनमेल विवाह के परिणामस्वरूप वह शीघ्र ही विधवा बन जाती है और वैधव्य का नारकीय जीवन भोगती हुई गंभीर और मुक रहने लगती है। उसके चरित्र से करूण संवेदना उत्पन्न होती है।

गुलाबी शामधारी की विधवा है। रिश्ते के अनेक पुरूषों के दुर्व्यवहार से वह चीढ उठती है और अंत में बैजू का आश्रय लेती है। उसके इस पापाचार के विरूध्द जब गाँव के महात्मा उसके खिलाफ शोर मचाते हैं तब तैश में आकर वह एक-एक करके सबका पर्दा फाश करती है।

उपन्यास में सामाजिक जीवन के हर पक्ष को उजागर करनेवाले पात्र अपने-अपने वर्ग के प्रतिनिधि हैं, फिरभी उनकी अपनी वैयक्तिक विशिष्टता भी उभरकर आयी है। मिश्रजी के पात्रों को अच्छे और बुरे उन दो खानों में बाँटा जा सकता है। मध्यमवर्ग और निम्नवर्गीय पात्रोंमें अच्छे और बुरे पात्रों का अलग-अलग वर्ग बन गया है। बुरे सदैव बुरे हैं अच्छे प्रारंभ से अंत तक अच्छे ही हैं।

लेखक ने गाँव के लोगों की विकृतियों का बडी निर्ममता से चित्रण किया है। फिर भी गाँव के लोगों के प्रति लेखक की गहरी सहानुभूति है। लेखक ने गाँव की अपराजेय संघर्षशील चेतना को गाँव के लोगों की क्रियाशीलता में खोजने का प्रयत्न किया है। लेखक को एक उम्मीद है ,शायद अब भी कुछ हो जाय। 'पानी के प्राचीर' एक पिछडे हुए लोगों के जीवन की इसी उम्मीद की रचनात्मक तलाश है।

आँचलिक शिल्पविधान के अनुसार उपन्यास में बहुपात्रोंकी योजना की गई है जिससे अंचल की सच्चाइयों को अपने बहुविध रूप में प्रकट किया जा सकेउपन्यास में चरित्र में **प्रती**कात्मकता का भी परिचय मिलता है लेखक पात्र और चरित्र निरूपण में पूर्णत: सफल है।

संदर्भ संकेत

1) डॉ. मृत्यूजंय उपाध्याय : हिंदी के आँचलिक उपन्यास पृ.- 1381 ।

2) डॉ. सत्यपाल चुघ : प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि पृ, - 557 ।

3) डॉ. रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर पृ. - 10 ।

4) वही पृ. 15 ।

5) वही पृ. 65 ।

6) वही पृ. 59 ।

7) महावीर सिंह चौहान : रामदरश मिश्र की सृजनयात्रा पृ. 79 ।

8) डॉ. रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर पृ. 105 ।

9) महावीर सिंह चौहान : रामदरश मिर की सृजनयात्रा - पृ. 80 ।

10) डॉ. रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर पृ. 167 ।

11) वही पृ, 186 ।

12) वही पृ. 207 ।

13) वही पृ. 211 ।

14) महावीर सिंह चौहान : रामदरश मिश्र की सृजनयात्रा पृ. 80 ।

15) डॉ. रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर पृ. 69 ।

16) वही पृ. 65 ।

17) वही पृ. 68 ।

18) वही पृ. 70 ।

19) वही पृ. 97 ।

20) वही पृ. 78 ।

21) वही पृ. 139 ।

22) वही पृ. 139 ।

23) वही पृ. 140।

24) वही पृ. 21 ।

25) वही पृ. 220 ।

26) वही पृ. 207 ।

27) वही पृ. 42 ।

28) वही पृ. 74 - 76 ।

29) वही पृ. 156 ।

30) वही पृ. 123 ।

31) डॉ. रामदरश मिश्र : पानी के प्राचीर पृ. 126 ।

32) वही पृ. 127 ।

33) वही पृ. 127 ।

34) वही पृ. 128 ।

35) वही पृ. 56 ।

36) वही पृ. 157 ।

37) वही पृ. 202 ।

38) वही पृ. 202 ।

39) वही पृ. 203 ।

40) वही पृ. 208 ।

41) वही पृ. 24 ।

42) वही पृ. 60 ।

43) वही पृ.98 ।

44) वही पृ. 98-99 ।

45) वही पृ. 180 ।

46) डॉ. जवाहर सिंह : हिंदी के आँचलिक उपन्यासों की शिल्पविधि पृ. 145 ।

47) डॉ. महावीर सिंह चौहान : रामदरश मिश्र की सृजनशीलता पृ. 82 ।